Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या. 9 6 / 9 2 2 आगत संख्या. 32,767

पुस्तक वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि से 15 दिन तक पुस्तक पुस्तकालय में अवश्य आ जानी चाहिए। अन्यथा [illegible] के हिसाब से [illegible] देय होगा।

Stock Verification-2024

Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय

पुस्तक संख्या १४।१३२

पंजिका संख्या ३२.२.१२

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई सज्जन पन्द्रह दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकते।

श्री भवानीप्रसाद जी

हलदौर (बिजनौर) निवासी द्वारा पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को सवादोहजार पुस्तकें सप्रेम भेंट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stock Verification-2024

स्टाक सत्यापीकरण १९८४-१९८५

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14,13.2
32919

वैदिक-पाठ-माला।

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक सं० १०:१...
आगत सं० १०६...
तिथि० १५.२.२...
गुरुकुल ग्रन्थालय कांगड़ी.

प्रथम पुस्तक

लेखक
श्रीपाद दामोदर सातवळकर.
स्वाध्याय-मंडल, औंध, (जि. सातारा)

प्रथमवार ३०००

विक्रम संवत् १९७३
शालिवाहन शक १८४१-ईसवी सन १९१९.

मूल्य तीन आना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय-मंडल का कार्य ।

'वेदका पढना पढाना, सुनना सुनाना सब आर्योंका परम धर्म है ।'

वेदके सुगम पुस्तक प्रकाशित करके, सबको पढने योग्य वेदको सुगम बनाना 'स्वाध्याय-मंडल' का कार्य है । इस संस्थामें कई पंडित कार्य कर रहे हैं । 'स्वाध्याय-मंडल' का व्यय दानी पुरुषोंके दान द्वारा चल रहा है ।

क्या आप इस पवित्र कार्यके लिये द्रव्य द्वारा सहाय्यता करेंगे ?

मंत्री-स्वाध्याय-मंडल,

औंध (जि. सातारा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CHECKED 1973

पुस्तक सं०.....
आगत सं० १५६३.....
दिनां० १७.२.२०२६
गुरुकुल ग्रन्थालय कांगड़ी

वैदिक-पाठ-माला ।

प्रथम पुस्तक ।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

लेखक,
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर.
स्वाध्याय-मंडल औंध (जि. सातारा)

प्रथमवार ३०००

विक्रम संवत् १९७६
शालीवाहन शक १८४१-ईसवी सन १९१९.

मूल्य तीन आना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रकः—चिंतामण सखाराम देवळे, मुंबई वैभव प्रेस,
सँढर्स्ट रोड, गिरगांव-मुंबई.

प्रकाशकः—श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
स्वाध्याय मंडल, औंध, (जि० सातारा.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९६
९३२

प्रस्तावना.

पाठविधिमें धार्मिक शिक्षणकी अत्यंत आवश्यकता है। परंतु इस समय तक छोटे छोटे बालकोंके लिये वैदिक सुगम पाठ पुस्तक कोई बनी नहीं है। इस न्यूनताकी पूर्तिके लिये यह पुस्तक बनाई गई है। आशा है कि इससे बालकोंकी धार्मिक शिक्षा उत्तम रीतिसे होगी।

शिक्षकोंको उचित है, कि वे प्रथम लड़कोंसे मंत्र कंठ करावें, और पश्चात पद और अर्थका बोध करा देवें। तत्पश्चात भावार्थ समझा देवें। भावार्थ समझानेके समय यदि कोई कथा, कहानी अथवा आख्यान वा चरित्र कहकर, उस भावार्थको नवयुवकोंके कोमल हृदयपर प्रतिबिंबित करनेका यत्न किया जाय, तो अधिक लाभ होगा।

यदि शिक्षक इस पुस्तकको अधिक उपयोगी बनानेके लिये योग्य सूचना करेंगे, तो उसका द्वितीय संस्करणके समय अवश्य विचार किया जायगा।

स्वाध्याय मंडल, औंध
१।१०।१९१९.

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14,13.2
32919

वैदिक-पाठ-माला ।

प्रथम-पुस्तक ।

पाठ १

(१) ईश्वर सर्व व्यापक है ।

ईशा वास्यमिदं सर्वम् ॥ १ ॥

यजु. ४० । १॥

पद——ईशा । वास्यं । इदं । सर्वं ॥

अर्थ——(इदं) यह (सर्वं) सब जगत् (ईशा) परमेश्वरने (वास्यं) वसने योग्य है ॥

भावार्थ——इस जगतमें पृथ्वी, वृक्ष, पर्वत, नदी, सूर्य, चंद्र, मनुष्य, गाय, घोडा आदि अनेक पदार्थ हैं । उन सब पदार्थोंमें परमेश्वर है । ऐसा कोई पदार्थ नहीं है कि, जिसमें परमेश्वर नहीं है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २.

(२) लालच कभी नहीं करना।

तेन त्यक्तेन भुंजीथाः ।
मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥ २ ॥

यजु ४० । १ ॥

पद—तेन । त्यक्तेन । भुंजीथाः । मा । गृधः । कस्य । स्वित् । धनं ।

अर्थ—(**तेन**) इस लिये (**त्यक्तेन**) दान करके, पश्चात् स्वयं (**भुंजीथाः**) उपभोग करो । (**मा**) मत (**गृधः**) ललचाओ । (**कस्य**) किसका (**स्वित्**) भला (**धनं**) धन है ?

भावार्थ—सबसे पहिले दूसरेकी सहायता करो । परोपकार करनेके पश्चात् अपने लिये सुख भोगो । किसी समय लालच न करो । लालच करनेका परिणाम बहुत बुरा है । धन किसका है ? इसका विचार करो । सब धन परमेश्वर का हि है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३

(३) पुरुषार्थी बनो ।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि ।
जिजीविषेच्छतं समाः ॥ ३ ॥

यजु ४०।२

पद—कुर्वन् । एव । इह । कर्माणि । जिजीविषेत् । शतं । समाः ॥

अर्थ—(**इह**) इस जगतमें (**कर्माणि**) उत्तम कर्म (**कुर्वन्**) करके (**एव**) हि (**शतं**) सौ (**समाः**) वर्ष तक (**जिजीविषेत्**) जीनेकी इच्छा करो ॥

भावार्थ—इस जगतमें सदा, प्रति दिन, उत्तम उत्तम उद्योग अवश्य करना चाहिए । अपना समय आलसमें व्यर्थ खोना अच्छा नहीं । आलससे हानि है और पुरुषार्थसे लाभ होता है ॥ प्रत्येक मनुष्यको सौ वर्ष जीनेका प्रयत्न करना चाहिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ४.

(४) सबका भला करो ।

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु ।
स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः ॥ ४ ॥

अथर्व० १।३१।४

पद—स्वस्ति । मात्रे । उत । पित्रे । नः । अस्तु । स्वस्ति । गोभ्यः । जगते । पुरुषेभ्यः ॥

अर्थ—(**नः**) हम सबके (**मात्रे**) माता (**उत**) और (**पित्रे**) पिता के लिये (**स्वस्ति**) आनंद प्राप्त (**अस्तु**) होवे । तथा (**गोभ्यः**) गौ आदि पशु ओंके लिये (**पुरुषेभ्यः**) मनुष्यमात्र के लिये और (**जगते**) सब जगत् के लिये (**स्वस्ति**) कल्याण प्राप्त होवे ॥

भावार्थ—माता पिता और सब अपने संबंधियोंका कल्याण करनेकी इच्छा धरनी चाहिए । तथा सब मनुष्योंका, सब पशुपक्षियोंका, सब प्राणियोंका और सब जगतका भला करनेकी इच्छा धरना चाहिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ५.

(९) उत्तम मार्गसे चलो ।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् ।
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ॥ ५ ॥

यजु० ४०।१६

पद—अग्ने । नय । सु-पथा । राये । अस्मान् । विश्वानि । देव । वयुनानि । विद्वान् ॥

अर्थ—हे (**अग्ने**) तेजस्वी ईश्वर ! (**अस्मान्**) हम सबको (**सु-पथा**) उत्तम मार्गसे (**राये**) ऐश्वर्यकी ओर (**नय**) ले जाओ । क्यों कि हे (**देव**) ईश्वर ! तू (**विश्वानि**) सब (**वयुनानि**) कर्मोंको (**विद्वान्**) जानता है ।

भावार्थ—प्रत्येक मनुष्य उत्तम सच्चे मार्गसे चले । सचाईके साथ अपना व्यवहार करे और धन ऐश्वर्य आदि प्राप्त करे । कभी बुरे मार्गसे कोई भी मनुष्य धन न कमावे॥ परमेश्वर मनुष्योंके सब कर्मोंको जानता है । और बुराई करनेपर अवश्य दण्ड देता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ६.

(६) ईश्वरको नमन करो ।

भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥ ६॥

यजु. ४० । १६ ॥

पद—भूयिष्ठां । ते । नमः । उक्तिं । विधेम ॥

अर्थ—हे ईश्वर । (**ते**) तेरे लिये (**भूयिष्ठां**) बहुतहि (**नमः**)नमन का (**उक्तिं**) भाषण (**विधेम**) हम सब करेंगे ॥

भावार्थ—हरएक मनुष्यको चाहिए कि वह प्रति दिन अत्यंत नम्रतापूर्वक परमेश्वरकी उपासना अर्थात् पूजा करे । प्रतिदिन सवेरे और शामको ईश्वरकी भक्ति करना प्रत्येक मनुष्यका अवश्य कर्तव्य है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ७.

(७) आपसमें झगडा न करो ।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् ।
मा स्वसारमुत स्वसा ॥ ७ ॥

अथर्व० ३।३०।३

पद—मा । भ्राता । भ्रातरं । द्विक्षत् । मा । स्वसारं । उत । स्वसा ॥

अर्थ—(**भ्राता**) भाई (**भ्रातरं**) भाईके साथ (**मा**) न (**द्विक्षत्**) लडाई करे । (**उत**) और (**स्वसा**) बहन (**स्वसारं**) बहनसे (**मा**) न झगडा करे ॥

भावार्थ—भाई अपने भाईके साथ कभी लडाई न करे, तथा बहन अपने बहनके साथ भी कभी न झगडा करे । भाई बहनमें कभी झगडा न होवे । सब आपसमें मिलजुल कर प्रेमके साथ वर्ताव करें ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ८.

(८) उत्तम बातचीत करो ।

सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा ।
वाचं वदत भद्रया ॥ ८ ॥

अथर्व. ३।३०।३

पद—सम्यञ्चः । स–व्रताः । भूत्वा । वाचं । वदत । भद्रया ॥

अर्थ—आपसमें (**सम्यंचः**) उत्तम प्रकारसे मिल जुलकर (**स–व्रताः**) एकही कार्यको प्रेमसे करने वाले (**भूत्वा**) बनकर आपसमें (**भद्रया**) अच्छे विचारके साथ उत्तम (**वाचं**) भाषण (**वदत**) किया करो ॥

भावार्थ—आपसमें मिल जुल कर रहो । कभी मत् झगडो । सब मिलकर अपना अपना कर्तव्य उत्तम रीतिसे करते जाओ । सदा उत्तम भाषण किया करो । बुरे शब्दका उच्चारण कभी न करो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ९.

(९) दयाका भाव धारण करो ।

सहृदयं सांमनस्यम् ।
अविद्वेषं कृणोमि वः ॥ ९ ॥

अथर्व० ३।३०।१

पद—स-हृदयं । सां-मनस्यं । अ-विद्वेषं । कृणोमि । वः ॥

अर्थ—(**वः**) आप सब लोकोंमें (**स-हृदयं**) दयाका भाव (**सां-मनस्यं**) उत्तम विचारी मन और (**अ-वि-द्वेषं**) प्रेम मैं (**कृणोमि**) करता हूं ॥

भावार्थ—परमेश्वर कहता है कि, सब लोक आपसमें दयाका भाव रखें । मनसे उत्तम विचार किया करें । और आपसमें प्रेमका वर्ताव करें । एक दूसरे का कभी द्वेष न करें ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १०.

(१०) मातापिताके अनुकूल आचरण करो।

अनु व्रतः पितुः पुत्रो।
मात्रा भवतु सं मनाः ॥ १० ॥

अथर्व. ३।३०।२

पद—अनु-व्रतः। पितुः। पुत्रः। मात्रा। भवतु। सं-मनाः॥

अर्थ—(**पुत्रः**) पुत्र (**पितुः**) पिताके साथ (**अनु-व्रतः**) उत्तम काम करनेवाला बने। तथा वह पुत्र (**मात्रा**) माताके साथ (**सं-मनाः**) उत्तम मनसे (**भवतु**) रहे॥

भावार्थ—पुत्र अपने पिताके साथ उत्तम काम करे। पुत्र अपने पिताका प्रारंभ किया हुआ उत्तम कर्म उत्तम प्रकारसे चलावे। तथा वह पुत्र अपनी माताके साथ उत्तम विचारसे उत्तम भाषण तथा अन्य व्यवहार करे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ११.

(११) पति पत्नीका प्रेम ।

जाया पत्ये मधुमतीं ।
वाचं वदतु शांतिवाम् ॥ ११ ॥

अथर्व. ३।३०।२

पद—जाया । पत्ये । मधु–मतीं । वाचं । वदतु । शांती–वाम् ॥

अर्थ––(**जाया**) धर्मपत्नी (**पत्ये**) अपने पतिके साथ (**मधु–मतीं**) मीठा और (**शांति–वां**) शांत (**वाचं**) भाषण (**वदतु**) बोले ।

भावार्थ—धर्मपत्नी अपने पतिके साथ शांत और मीठा भाषण करे । पत्नी अपने पतिके साथ कभी न झगडे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १२.

(१२) परिवारमें मिलकर उपासना ।

सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यत ।
आरा नाभिमिवाऽभितः ॥ १२ ॥

अथर्व. ३।३०।६ ॥

पद—सम्यंचः । अग्निं । सपर्यत । आराः । नाभिं । इव । अभितः ॥

अर्थ—(**इव**) जिस प्रकार (**नाभिं**) चक्रके नाभीके (**अभितः**) चारों ओर (**आराः**) आरे होते हैं, उस प्रकार (**सम्यंचः**) सब मिलकर (**अग्निं**) तेजस्वी-ईश्वरकी (**सपर्यत**) पूजा करो ॥

भावार्थ—घरके सब मनुष्य मिलकर बैठें और सब मिलकर ईश्वरकी उपासना और प्रार्थना करें ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १३.

(१३) सबका ऐक्य ।

सं गच्छध्वं सं वदध्वम् ।
सं वो मनांसि जानताम् ॥ १३ ॥

ऋ० १०।१९१।२

पद—सं । गच्छध्वं । सं । वदध्वं । सं । वः । मनांसि । जानताम् ॥

अर्थ—(**सं**) मिल जुल कर (**गच्छध्वं**) चलो । (**सं**) मिल जुल कर (**वदध्वं**) भाषण करो । (**वः**) आप सबके (**मनांसि**) मन (**सं**) मिल जुल कर (**जानतां**) ज्ञानी बनाओ ॥

भावार्थ—मिलकर रहो । मिलकर उत्तम भाषण करो । और अपने मनोंको सज्ञान करो ॥ कोई भी परस्पर द्वेष न करे । परस्पर बुरा भाषण न करे । और कोई अज्ञानी न रहे ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १४.

(१४) विद्वानोंके समान अपना आचरण करो ।

देवा भागं यथा पूर्वे ।
सं जानाना उपासते ॥ १४ ॥

ऋ० १०।१९१।२

पद—देवाः । भागं । यथा । पूर्वे । सं जानानाः । उपासते ॥

अर्थ—(**यथा**) जिस प्रकार (**पूर्वे**) पूर्ण (**संजानानाः**) उत्तम ज्ञानी (**देवाः**) विद्वान (**भागं**) अपना कर्तव्यका भाग (**उपासते**) किया करते हैं, उस प्रकार तुम भी किया करो ॥

भावार्थ—श्रेष्ठ सदाचारी पुरुष अपना कर्तव्य जिस प्रकार करते हैं, उस प्रकार हरएक मनुष्यको अपना कर्तव्य उत्तम रीतिसे करना चाहिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १५.

(१५) परमेश्वर सबका भाई है।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता।
धामानि वेद भुवनानि विश्वा ॥ १५ ॥

यजु ३२।१०

पद—सः । नः । बन्धुः । जनिता । सः । विधाता । धामानि । वेद । भुवनानि । विश्वा ॥

अर्थ—(**सः**)वह परमेश्वर (**नः**) हम सबका (**बन्धुः**) भाई है। वह हम सबका (**जनिता**) उत्पादक है। (**वि-धाता**) सबका विशेष प्रकारसे धारण करने वाला (**सः**) वह ईश्वर (**विश्वा**) सब (**भुवनानि**) भुवन और (**धामानि**) स्थान (**वेद**) जानता है ॥

भावार्थ—वह परमेश्वर हम सबका भाई, जनक, और आधार है, वह सब कुछ जानता है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १६.

(१६) एक ईश्वरके अनेक नाम होते हैं।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदंति।
अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ १६ ॥

ऋ. १।१६४।४६

पद—एकं । सत् । विप्राः । बहुधा । वदन्ति । अग्निं यमं । मातरि-श्वानं । आहुः ॥

अर्थ—(**एकं**) एकहि (**सत्**) सत्यस्वरूप परमेश्वरकी (**विप्राः**) ज्ञानीलोक (**बहु-धा**) अनेक प्रकारके नामोंसे (**वदन्ति**) प्रशंसा करते हैं । उसी एकको (**अग्निं**) अग्नि (**यमं**) यम और (**मातरि-श्वानं**) वायु भी (**आहुः**) कहते हैं ॥

भावार्थ—ईश्वर एक है। परंतु उस एक सत्य ईश्वरकी ज्ञानी लोक अनेक प्रकारके नामोंसे स्तुति करते हैं। कोई उसको अग्नि कहते हैं, कोई यम और कोई वायुभी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १७.

(१७) ईश्वर सबका एक स्वामी है ।

हिरण्य-गर्भः समवर्तताग्रे ।
भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ १७ ॥

ऋ. १०।१२१।१

पद—हिरण्य-गर्भः । सं । अवर्तत । अग्रे । भूतस्य । जातः । पतिः । एकः । आसीत् ॥

अर्थ—(**अग्रे**) पहिलेसे (**हिरण्य-गर्भः**) तेजस्वी पदार्थोंको उत्पन्न करनेवाला ईश्वर (**सं अवर्तत**) विद्यमान है, वह ईश्वर (**भूतस्य**) सब सृष्टिका (**एकः**) एक हि (**पतिः**) स्वामी (**जातः**) प्रसिद्ध (**आसीत्**) है ।

भावार्थ—जिसने सूर्य, चंद्र, अग्नि आदि तेजस्वी पदार्थोंको उत्पन्न किया है, वह ईश्वर पहिलेसे सर्वत्र है । वह ही सब सृष्टिका एक स्वामी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १८.

(१८) वह सबका उपास्य है ।

स दाधार पृथिवीमुत द्यां ।
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ १८ ॥

ऋ. १०।१२१।१

पद—सः । दाधार । पृथिवीं । उत । द्यां । कस्मै । देवाय । हविषा । विधेम ॥

अर्थ—(**सः**) वह ईश्वर (**पृथिवीं**) इस भूमिको (**उत**) और (**द्यां**) उस आकाशको (**दाधार**) धारण करता है। उस (**क–स्मै**) आनंदमय (**देवाय**) ईश्वरकी (**हविषा**) दान द्वारा हम सब (**विधेम**) भक्ति करेंगे ॥

भावार्थ—वह हि एक ईश्वर इस सब जगतको धारण करता है । उसीकी पूजा सबको करना चाहिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ १९.

(१९) ईश्वरके समान शक्तिमान और कोई नहीं है ।

नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति ।
न प्रतिष्ठिः पुरुमायस्य सह्योः ॥ १९ ॥

ऋ. ६।१८।१२

पद—न । अस्य । शत्रुः । न । प्रति-मानं । अस्ति । न । प्रतिष्ठिः । पुरु-मायस्य । सह्योः ॥

अर्थ—(**अस्य**) इस ईश्वरका कोई (**शत्रुः**) शत्रु (**न**) नहीं है । और उसके (**प्रति मानं**) बराबरीका भी कोई (**न अस्ति**) नहीं है । इस (**पुरु-मायस्य**) अनंत शक्तिवाले (**सह्योः**) बलवान ईश्वरको छोड कर और कोई (**प्रति-ष्ठिः**) आश्रय (**न**) नहीं है ॥

भावार्थ—इस ईश्वरका कोई भी शत्रु नहीं है । तथा इसके बराबर भी कोई नहीं है । सब दूसरोंकी शक्ति इससे कम है । यह स्वयं सबको आश्रय देता है, परंतु इसको किसीके आधारकी आवश्यकता नहीं है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २०.

(२०) ज्ञानी लोक उसको देखते हैं ।

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ॥ २० ॥

ऋ. १।२२।२०

पद—तत् । विष्णोः । परमं । पदं । सदा । पश्यन्ति । सूरयः । दिवि । इव । चक्षुः । आततम् ॥

अर्थ—(**विष्णोः**) सर्वव्यापक ईश्वरका (**तत्**) वह (**परमं**) महान (**पदं**) स्थान (**सूरयः**) ज्ञानी-लोक (**सदा**) हमेशा (**पश्यन्ति**) देखते हैं । (**इव**) जिस प्रकार (**दिवि**) आकाशमें (**आततं**) विस्तृत (**चक्षुः**) सूर्य दिखाई देता है ।

भावार्थ—जिस प्रकार आकाशमें सूर्य दिखाई देता है, उस प्रकार विद्वान लोक उस ईश्वरको सर्वत्र देखते हैं । परंतु अज्ञानी उसको नहीं देख सकते ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २१.

(२१) ईश्वरका काव्य पढनेवाले अमर होते हैं।

पश्य देवस्य काव्यं।
न ममार न जीर्यति ॥ २१ ॥

अथर्व. १०।८।३२

पद—पश्य। देवस्य। काव्यं। न। ममार। न। जीर्यति॥

अर्थ—हे मनुष्य! तू (**देवस्य**) ईश्वरका (**काव्यं**) काव्य (**पश्य**) देखो और सुनो। जो पढता है, वह (**न ममार**) मरता नहीं और (**न जीर्यति**) जीर्ण नहीं होता।

भावार्थ—मनुष्योंको उचित है, कि वे ईश्वरके गीत गावें। जो ईश्वरके गीत गाते हैं, वे दुर्बल नहीं होते, और अपमृत्युसे मरते नहीं।

वेद ईश्वरके गीत हैं। और वेदहि आर्योंका धर्मपुस्तक है। इस लिये आर्योंको वेद पढना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २२.

(२२) ज्ञानसे दोषोंको हटाओ ।

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो ।
वाऽतितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु ॥२२॥

यजु. ३६।२

पद—यत् । मे । छिद्रं । चक्षुषः । हृदयस्य । मनसः । वा । अति-तृण्णं । बृहस्पतिः । मे । तत् । दधातु ॥

अर्थ—(**मे**) मेरे (**चक्षुषः**) आंख, (**हृदयस्य**) हृदय, (**वा मनसः**) अथवा मनका (**यत्**) जो (**अति-तृण्णं**) अत्यंत फटा हुआ (**छिद्रं**) छेद होगा (**तत्**) उसको (**बृहस्पतिः**) ज्ञानका स्वामी (**दधातु**) ठीक करे ॥

भावार्थ—अपने इंद्रियों और अवयवोंमें जो जो दोष होगा, वह ईश्वरकी कृपासे दूर हो सकता है । मनुष्योंको उचित है कि, वे ज्ञानी गुरुके पास जावें, उनकी सहायतासे अपने दोषोंको दूर करें और पवित्र बनें ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २३.

(२३) जलसे आरोग्य प्राप्त होता है ।

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन ॥ महे रणाय चक्षसे ॥ २३ ॥

ऋ. १०।९।१

पद—आपः । हि । स्थ । मयो–भुवः । ताः । न ऊर्जे । दधातन । महे । रणाय । चक्षसे ॥

अर्थ—(**आपः**) जल (**हि**) निश्चयसे (**मयो–भुवः**) आरोग्य करनेवाला (**स्थ**) है । (**ताः**) वह जल (**नः**) हम सबको (**ऊर्जे**) बल, (**महे**) महत्व, (**रणाय**) रमणीयता और (**चक्षसे**) ज्ञान (**दधातन**) देवे ॥

भावार्थ—जलसे आरोग्य होता है, तथा उससे हि बल, पुष्टि, रमणीयता अर्थात् सुंदरता और विचारशक्ति प्राप्त होती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २४.

(२४) मित्रकी प्रेमदृष्टिसे सबको देखो ।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ॥ २४ ॥

यजु. ३६।१८

पद—मित्रस्य । अहं । चक्षुषा । सर्वाणि । भूतानि । समीक्षे ॥

अर्थ—(**अहं**) मैं (**मित्रस्य**) मित्रकी (**चक्षुषा**) दृष्टिसे (**सर्वाणि**) सब (**भूतानि**) प्राणियोंको (**समीक्षे**) देखता हूं ॥

भावार्थ—सब प्राणियोंको मित्रकी दृष्टिसे देखना चाहिए । किसीका द्वेष नहीं करना चाहिए । किसीको भी दुःख नहीं देना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २५.

(२५) ईश्वरकी भक्तिसे निर्भय बनो ।

यतो यतः समीहसे ।
ततो नो अभयं कुरु ॥ २५ ॥

यजु. ३६।२२

पद—यतः । यतः । सं-ईहसे । ततः । नः अभयं । कुरु ।

अर्थ—हे ईश्वर ! (**यतः यतः**) जहां जहांसे तू (**सं-ईहसे**) कर्म करता है (**ततः**) वहां वहांसे (**नः**) हम सबको (**अ-भयं**) निर्भय (**कुरु**) करो ॥

भावार्थ—जिस जिस स्थानसे परमेश्वरकी शक्ति कार्य कर रही है, उस उस स्थानसे हम सब निर्भय हो जांयगे । परमेश्वर सर्वत्र है, इस लिये उसके भक्त सर्वत्र निर्भय होते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २६.

(२६) ईश्वर भक्तिसे पवित्र बनो ।

सहस्रधारे वितते पवित्र आ
वाचं पुनंति कवयो मनीषिणः ॥ २६ ॥

ऋ. ९।७३।७

पद—सहस्र–धारे । वि–तते । पवित्रे । आ । वाचं । पुनंति । कवयः । मनीषिणः ॥

अर्थ—(**सहस्र–धारे**) सहस्र प्रकारोंसे धारण करनेवाले (**वि-तते**) व्यापक (**पवित्रे**) पवित्र ईश्वरमें (**मनीषिणः**) बुद्धिमान (**कवयः**) ज्ञानी (**वाचं**) अपनी वाणीको (**पुनन्ति**) पवित्र करते हैं ।

भावार्थ—सब जगतका धारण पोषण करनेवाले, सर्वव्यापक परमेश्वरके शुद्ध विचारसे ज्ञानीलोक अपनी वाचाको पवित्र करते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २७.

(२७) मनको कल्याणके मार्गमें लगाओ ।

भद्रं नो अपि वातय ।
मनो दक्षमुत क्रतुम् ॥ २७ ॥

ऋ १०।२५।१

पद—भद्रं । नः । अपि । वातय । मनः । दक्षं । उत । क्रतुम् ॥

अर्थ—हे ईश्वर ! (**नः**) हम सबका (**मनः**) मन (**भद्रं**) कल्याण, (**दक्षं**) बल (**उत**) और (**क्रतुं**) पुरुषार्थके लिये (**अपि-वातय**) प्रेरित करो ॥

भावार्थ—सब मनुष्योंको उचित है कि, वे सबके कल्याणके लिये, सबको बलवान बननेके लिये, और उत्तम पुरुषार्थ करनेके लिये अपने मनको उत्साहित करें ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २८

(२८) मनसे शुभ विचार करो ।

हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं ।
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ २८ ॥

यजु. ३४।६

पद—हृत्-प्रतिष्ठं । यत् । अ-जिरं । जविष्ठं । तत् । मे । मनः । शिव-संकल्पं । अस्तु ॥

अर्थ—(**हृत्-प्रतिष्ठं**) हृदयमें रहा हुआ (**अ-जिरं**) बलवान और (**जविष्ठं**) वेगवान ऐसा (**यत्**) जो (**मे**) मेरा (**मनः**) मन है (**तत्**) वह (**शिव-संकल्पं**) उत्तम विचार करनेवाला (**अस्तु**) होवे ॥

भावार्थ—मनुष्योंका मन हृदयमें रहता है । वह मन अत्यंत बलवान और वेगवान है । उस मनको सदा उत्तम विचारोंका मनन करनेमेंहि लगाना चाहिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ २९.

(२९) ईश्वर सबका राजा है।

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनां
अधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति ॥ २९ ॥

ऋ. ७।२७।३

पद--इन्द्रः । राजा । जगतः । चर्षणीनां । अधि । क्षमि । वि–सु–रूपं । यत् । अस्ति ॥

अर्थ—सब (**जगतः**) जगतका और (**चर्षणीनां**) सब प्राणियोंका तथा (**अधि क्षमि**) पृथ्वीपर (**वि–सु–रूपं**) अनेक रूपोंवाला (**यत्**) जो कुछ (**अस्ति**) है, उस सबका (**इन्द्रः**) परमेश्वर हि एक (**राजा**) राजा है ॥

भावार्थ--सब प्राणिमात्र और जगतके सब पदार्थ इन सबका परमेश्वर हि एक सच्चा महाराजा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३०.

(३०) जलहि उत्तम औषध है ।

आप इद्वा उ भेषजीः ।
आपो अमीव–चातनीः ॥ ३० ॥

ऋ. १०।१३७।६

पद––आपः । इत् । वा । उ । भेषजीः । आपः । अमीव–चातनीः ॥

अर्थ––(**इत् वा उ**) निश्चयसे (**आपः**) जलहि (**भेषजीः**) औषध है । (**आपः**) जलहि (**अमीव–चातनीः**) रोगोंको दूर करनेवाला है ॥

भावार्थ––सबसे अच्छी दवा जल है । जलको योग्य रीतिसे सेवन करनेसे सब बीमारियां दूर हो सकतीं हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३१.

(३१) परस्पर मित्रता करो ।

उत्तिष्ठत सं नह्यध्वं ।
मित्रा देवजना यूयम् ॥ ३१ ॥

अथर्व ११।१।२

पद—उत्तिष्ठत । सं-नह्यध्वं । मित्राः । देव-जनाः । यूयम् ॥

अर्थ—हे लोको ! (**यूयम्**) आप सब परस्पर (**मित्राः**) मित्र और (**देव-जनाः**) ज्ञानी मनुष्य बन कर (**उत्तिष्ठत**) उठिये और अपनी (**सं-नह्यध्वं**) उन्नति के लिये मिलकर पुरुषार्थ कीजिए ॥

भावार्थ—सब लोकोंको उचित है, कि वे परस्पर प्रेम करें, और ज्ञानी बनकर अपनी उन्नतिके लिये प्रयत्न करें ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३२.

(३२) उन्नतिका मार्ग।

यन्नूनमश्यां गतिं
मित्रस्य यायां पथा ॥ ३२ ॥

ऋ. ५।६४।३

पद—यत्। नूनं। अश्यां। गतिं। मित्रस्य। यायां। पथा॥

अर्थ—(**यत्**) यदि हम सब (**मित्रस्य**) मित्रके (**पथा**) मार्गसे (**यायां**) चलेंगे तो (**नूनं**) निश्चयसे उत्तम (**गतिं**) प्रगतिको (**अश्यां**) प्राप्त होंगे ॥

भावार्थ—यदि सब मनुष्य परस्पर प्रेमपूर्वक वर्ताव करेंगे, तो निश्चयसे उन्नतिको प्राप्त होंगे। अर्थात् आपसमें झगडेंगे तो गिर जायगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३३.

(३३) सर्वत्र निर्भयता धारण करो ।

अभयं मित्रादभयममित्राद् ।
अभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ॥ ३३ ॥

अथर्व. १९।१५।६

पद——अभयं । मित्रात् । अभयं । अमित्रात् । अभयं ज्ञातात् । अभयं । परोक्षात् ॥

अर्थ——हम सबको (**मित्रात्**) मित्रसे (**अ-भयं**) निर्भयता प्राप्त होवे । (**अ-मित्रात्**) शत्रूसे निर्भयता प्राप्त होवे । (**ज्ञातात्**) जिसको हम जानते हैं, उससे हम निर्भय होवें । और (**परोक्षात्**) जिसको हम नहीं जानते, उससे भी हम निर्भय होवें ॥

भावार्थ——सब मनुष्योंको उचित है, कि वे अपने अंदर बल धारण करके, किसीसे भी न डरते हुए, सदा अच्छा कर्तव्य करते जाय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३४.

(३४) निर्दोष बन कर विजय प्राप्त करो ।

अजैष्माद्यासनाम चाभूमा-
ऽनागसो वयम् ॥ ३४ ॥

ऋ. १०।१६४।५

पद––अजैष्म । अद्य । असनाम । च । अभूम । अनागसः । वयम् ॥

अर्थ––(**अद्य**) आज हि (**वयं**) हम सब (**अन्–आगसः**) निष्पाप (**अभूम**) बनेंगे (**च**) और परस्पर (**असनाम**) प्रेमका बर्ताव करेंगे, और हम सब (**अजैष्म**) विजय प्राप्त करेंगे ॥

भावार्थ––प्रथमतः सबको निर्दोष बनना चाहिए । पश्चात परस्पर प्रेमका बर्ताव करना चाहिए । जिससे विजय और यश प्राप्त हो सकता है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३५.

(३९) मृत्युको दूर करो ।

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत ।
द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ॥३५॥

ऋ. १०।१८।२

पद—मृत्योः । पदं । योपयन्तः । यदा । एत । दाघीयः । आयुः । प्र--तरं । दधानाः ॥

अर्थ—(**यदा**) जब आप (**मृत्योः**) मृत्युके (**पद**) पांवको (**योपयंतः**) परे ढकेलते हुए (**एत**) चलेंगे, तब (**द्राघीयः**) दीर्घ (**आयुः**) आयुष्य (**प्र–तरं**) अधिक (**दधानाः**) धारण करनेवाले बन जायंगे ।

भावार्थ—पुरुषार्थसे मृत्युको परे कीजिए । और दीर्घ आयुष्य प्राप्त कीजिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३६.

(३६) शुद्ध, पवित्र और पूज्य बनो ।

आप्यायमानाः प्रजया धनेन ।
शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः॥ ३६ ॥

ऋ. १०।१८।२.

पद—आ–प्यायमानाः । प्रजया । धनेन । शुद्धाः । पूताः । भवत । यज्ञियासः ॥

अर्थ—आप सब (**प्रजया**) संतति और (**धनेन**) धनके साथ (**आ–प्यायमानाः**) उन्नतिको प्राप्त होते हुए, (**शुद्धाः**) बाहेरसे शुद्ध, (**पूताः**) अंदरसे पवित्र और सब प्रकारसे (**यज्ञियासः**) पूजनीय (**भवत**) बन जाईए ॥

भावार्थ—संतान और धनको प्राप्त करके, सबको अपनी उन्नति करनी चाहिए । अंदरसे, बाहरसे और सब प्रकारसे शुद्ध, पवित्र और निर्दोष बनकर सबको श्रेष्ठ बनना चाहिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३७.

(३७) दीर्घायु बनो ।

कस्ये मृजाना अति यन्ति रिप्रं
आयुर्दधानाः प्रतरं नवीयः ॥ ३७ ॥

अथर्व. १८।३।१७

पद—क–स्ये। मृजानाः। अति–यन्ति। रिप्रं। आयुः। दधानाः। प्रतरं। नवीयः ॥

अर्थ—(**नवीयः**) नवीन (**प्र–तरं**) दीर्घ (**आयुः**) आयुष्य (**दधानाः**) धारण करते हुए, (**क–स्ये**) ईश्वरकी भक्तिसे (**मृजानाः**) शुद्ध बनकर (**रिप्रं**) दोषोंके (**अति यन्ति**) पार होते हैं ॥

भावार्थ—जो मनुष्य अपनी आयु पुरुषार्थसे बढाते हैं, और अपने आपको ईश्वरकी भक्तिसे पवित्र बनाते हैं, उनके सब दोष दूर होते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३८.

(३८) सब प्रकारका शौर्य धारण करो ।

अति क्रामन्तो दुरिता पदानि ।
शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम ॥ ३८ ॥

अथर्व १२।२।२८

पद—अति-क्रामन्तः । दुरिता । पदानि । शतं । हिमाः । सर्व-वीराः । मदेम ॥

अर्थ—(**दुरिता**) दुष्ट (**पदानि**) अवस्था ओं-को (**अति-क्रामन्तः**) दूर करके और (**सर्व-वीराः**) सब प्रकारके शूर वीरोंको प्राप्त करके (**शतं हिमाः**) सौ वर्ष तक (**मदेम**) आनंदसे रहेंगे ॥

भावार्थ—दुष्ट विचारोंको दूर करना चाहिए । अच्छे निर्भय धैर्यमय विचारोंको अपने अंदर धारण करना चाहिए। और सौ वर्ष तक वीर पुरुषोंके साथ आनंदसे जीवन व्यतीत करना चाहिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ३९.

(३९) स्त्रियोंको पढना चाहिए ।

प्रबुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ॥ ३९ ॥

अथर्व. १४।२।७५

पद—प्र–बुध्यस्व । सु–बुधा । बुध्यमाना । दीर्घ–आयुत्वाय । शत–शारदाय ॥

अर्थ—हे स्त्री ! (**प्रबुध्यस्व**) तुम ध्यानमें धरो कि तुमको (**शत–शारदाय**) सौ वर्षकी (**दीर्घ–आयुत्वाय**) दीर्घ आयुके लिये प्रयत्न करना है । तथा (**बुध्यमाना**) पढकर (**सु–बुधा**) उत्तम विदुषी बनना है ॥

भावार्थ—स्त्रियोंको भी दीर्घ आयु तथा उत्तम विद्या प्राप्त करना चाहिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ४०.

(४०) स्त्री दीर्घ आयु प्राप्त करे ।

गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो
दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु ॥ ४० ॥

अथर्व १४।२।७५

पद—गृहान् । गच्छ । गृह–पत्नी । यथा । असः । दीर्घ । ते । आयुः । सविता । कृणोतु ॥

अर्थ—हे स्त्रि ! तूं (**गृह–पत्नी**) गृहिणी बनकर (**गृहान्**) पतिके घरको (**गच्छ**) जाओ और वहां (**यथा असः**) इस प्रकार रहो कि जिससे (**ते आयुः**) तेरी आयुष्यको (**सविता**) सूर्य (**दीर्घं कृणोतु**) दीर्घ बनावे ॥

भावार्थ—स्त्रिको चाहिए कि वह गृहिणी बन कर अपने पतिके घर चली जावे और वहां इस प्रकारका योग्य बर्ताव करे कि उनकी दीर्घ आयु बने । सूर्य प्रकाशके सेवन करनेसे आयु बढती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ४१.

(४१) ईश्वरसे अधिक कोई भी नहीं है ।

न त्वदन्यः कवितरो न मेधया
धीरतरो वरुण स्वधावान् ॥ ४१ ॥

अथर्व. ५।११।४.

पद––न । त्वत् । अन्यः । कवि–तरः । न । मेधया । धीर–तरः । वरुण । स्व–धा–वान् ॥

अर्थ––हे (**वरुण**) श्रेष्ठ ईश्वर ! (**त्वत् अन्यः**) तेरेसे भिन्न दूसरा कोई भी (**कवि–तरः**) अधिक ज्ञानी (**न**) नहीं है । (**मेधया**) बुद्धिसे (**धीर–तरः**) अधिक धैर्यशाली भी (**न**) कोई नहीं है । तूं (**स्व–धा–वान्**) अपनी धारणपोषणकी शक्तिसे युक्त है ।

भावार्थ––परमेश्वरसे कोई भी अधिक ज्ञानी, अधिक धैर्यवान्, अधिक बुद्धिवान् नहीं है । वह हि सबसे अधिक ज्ञानी, शूर और चतुर है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ४२.

(४२) ईश्वर हि सबसे प्राचीन है ।

ऋषि र्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा ॥ इन्द्र चोष्कूयसे वसु ॥४२॥

ऋ. ८।७।४१

पद--ऋषिः । हि । पूर्व जा । असि । एकः । ईशानः । ओजसा । इन्द्र । चोष्कूयसे । वसु ॥

अर्थ--हे ईश्वर ! तूं (**हि**) निश्चयसे (**ऋषिः**) ज्ञानी, (**पूर्व-जा**) सबसे प्राचीन और (**ओजसा**) बल के कारण सब जगतका (**एकः ईशानः**) एकहि स्वामी (**असि**) है । हे (**इन्द्र**) प्रभो ! तूं सबके लिये (**वसु**) धन (**चोष्कूयसे**) देता है ॥

भावार्थ--परमेश्वर सनातन, ज्ञानी और सबका एक स्वामी है, वह हि सबको ऐश्वर्य देता है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ४३.

(४३) ईश्वरकी पूजा करो ।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ॥
सचस्वा नः स्वस्तये ॥ ४३ ॥

ऋ. १।१।९

पद—सः । नः । पिता । इव । सूनवे । अग्ने । सु-उप-आयनः । भव । सचस्व । नः । स्वस्तये ॥

अर्थ—हे (**अग्ने**) तेजस्वी ईश्वर । **(पिता इव)** जिस प्रकार पिता (**सूनवे**) अपने पुत्रको प्राप्त होता है । उस प्रकार (**नः**) हम सबको तूं (**सु-उप-आयनः**) उत्तम रीतीसे प्राप्त (**भव**) होओ, तथा (**नः स्वस्तये**) हम सबको कल्याण (**सचस्व**) प्राप्त कराओ ॥

भावार्थ—परमेश्वर सबका पिता है । वह सबका पूजनीय उपास्य देव और सबका कल्याण करता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ४४.

(४४) ईश्वराहि सबका पिता और माता है।

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शत-क्रतो बभूविथ ॥ अधा ते सुम्नमी-महे ॥ ४४ ॥

ऋ. ८।९८।११

पद—त्वं । हि । नः । पिता । वसो । त्वं । माता । शत-क्रतो । बभूविथ । अध । ते । सु-म्नं । ईमहे ॥

अर्थ—हे (**शत-क्रतो**) सैंकडों कर्म करनेवाले और (**वसो**) सबको वसानेवाले ईश्वर ! (**हि त्वं**) निश्चयसे तू (**नः पिता**) हम सबका पिता और (**त्वं**) तू हि (**माता**) माता (**बभूविथ**) है। (**अध**) इसलिये (**सु-म्नं**) उत्तम कल्याण के लिये (**ते**) तेरी (**ईमहे**) प्रार्थना करते हैं ॥

भावार्थ—सबका पिता और माता परमेश्वर हि है। उसीकी सबको उपासना करनी चाहिए ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ ४५.

(४९) उस जगत्पतिकी भक्ति करो ।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं ।
धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ॥ ४५ ॥

यजु. २५।१८

पद—तं । ईशानं । जगतः । तस्थुषः । पतिं । धियं । जिन्वं । अवसे । हूमहे । वयम् ॥

अर्थ—(**वयं**) हम सब (**तं**) उस (**तस्थुषः**) स्थावर और (**जगतः**) जंगम सब सृष्टिके (**पतिं**) स्वामीकी (**अवसे**) अपने रक्षणके लिये (**हूमहे**) प्रार्थना करते हैं। वह ईश्वर (**धियं**) बुद्धिको (**जिन्वं**) प्रेरणा देता है ॥

भावार्थ—सब मनुष्योंको उचित है, कि वे उस जगतके प्रभूकी प्रतिदिन प्रार्थना करें। वह हि सबका संरक्षण और सबकी उन्नति करता है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय-मंडल द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

(१) यजुर्वेद अ० ३६ की व्याख्या। (द्वितीय वार) **सच्ची शांतिका सच्चा उपाय**। मूल्य आठ आने। व्ही. पी. से दस आने ॥

(२) यजुर्वेद अ० ३२ की व्याख्या। (द्वितीय वार) **एक-ईश्वरकी उपासना**। मूल्य आठ आने। वी. पी. से दस आने।

(३) **मानवी आयुष्यकी वैदिक मर्यादा**। मूल्य तीन आने। वी. पी. से पांच आने।

(४) यजुर्वेद अ० ३० की व्याख्या। **मनुष्योंकी सच्ची उन्नतिका सच्चा साधन**। मूल्य १ रु.। वी. पी. से एक रु. दो आने।

(५) **रुद्र देवताका परिचय**। मूल्य आठ आने। वी. पी. से दस आने ॥

(ये पुस्तक सब पुस्तक-विक्रेताओंके पास मिल सकते हैं।)

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,

हरिद्वार

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है । इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर दस नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड आप को लगाया जायेगा ।

५०००.११.१४ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar